Rohtas Mahila College, SASARAM

Study Material: SANSKRIT

B.A. Part-2, Paper-03

By:
Dr. Savitri Singh,
Associate Professor,
Deptt. of Sanskrit,
R.M.C. SASARAM

Topic: शुकनासोपदेश के आधार पर
राजाओं का चारित्र वर्णन / विशेषताएँ

राजाओं की विशेषताओं अथवा चरित्र-परिवर्तन की ओर संकेत करते हुए महामंत्री शुकनास कहते हैं कि:

आत्मविडम्बनाञ्चानुजीविना जनेन क्रियमाणामभिनन्दन्ति। मनसा देवताध्यारोपणप्रतारणासम्भूतसंभावनोपहताश्चान्तः प्रविष्टापरभुज-द्वयमिवात्मबाहुयुगलं सम्भावयन्ति। त्वगन्तरिततृतीयलोचनं स्व-ललाटमाशङ्कन्ते।

राजा लोग अपने अनुजीवियों, अनुचरों द्वारा की जाती हुई गुण रहित नकल को देखकर भी उनका स्वागत करते हैं आनंदित होते हैं। अपने आप को विष्णु, शिव आदि देवता मानने की कल्पना से उत्पन्न सम्भावनाओं द्वारा नष्ट हुई बुद्धि वाले वे (राजा) मन से अपनी दोनों भुजाओं में ही समाई हुई अन्य दोनों भुजाओं की अर्थात् अपने को चतुर्भुजी विष्णु की कल्पना करने लगते हैं तथा अपने ललाट में खाल के अन्दर छिपे तृतीय नेत्र वाला (शिव) मानने लगते हैं।

→

दर्शनप्रदानमपि अनुग्रहं गणयन्ति। दृष्टिपातमपि उपकारपक्षे स्थापयन्ति। सम्भाषणमपि संविभागमध्ये कुर्वन्ति। आज्ञामपि वरप्रदानं मन्यते। स्पर्शमपि पावनमाकलयन्ति।

राजा लोग दर्शन देना भी अनुग्रह मानते हैं, लोगों की ओर देख लेना भी उपकार समझते हैं, उनके साथ वार्तालाप करना भी पुरस्कार देना समझते हैं। आज्ञा देना भी वरदान देना मानते हैं, उनको स्पर्श करना भी पवित्र करना समझते हैं।

मिथ्यामाहात्म्यगर्वनिर्भराश्च न प्रणमन्ति देवताभ्यः, न पूजयन्ति द्विजातीन्, न मानयन्ति मान्यान्, नार्चयन्त्यर्चनीयान् नाभिवादयन्त्यभिवादनार्हान् नाभ्युत्तिष्ठन्ति गुरून्।

मूढ़ महत्त्व के अभिमान से युक्त राजा लोग देवताओं को प्रणाम नहीं करते हैं, ब्राह्मणों की वस्त्र पात्रादि देकर पूजा नहीं करते हैं, माननीय लोगों का मान नहीं करते, पूजनीय लोगों की पूजा नहीं करते, प्रणाम करने योग्य लोगों को प्रणाम नहीं करते तथा गुरुजनों का उठकर सत्कार नहीं करते हैं।

व्यर्थ प्रयास से दबाये हुए विषयभोग को सुख मान कर विद्वान् का (राजा लोग) उपहास करते हैं, वृद्ध लोगों के द्वारा दिये गये उपदेश को बुढ़ापे के कारण बकवाद मानकर उनको हीन दृष्टि से देखते हैं मन्त्रियों की सलाह को अपनी बुद्धि की पराजय मानकर निन्दा करते हैं तथा हित की बात कहने वाले के प्रति वे क्रोध करते हैं—

अनर्थकायासान्तरितविषयोपभोगसुखमित्युपहसन्ति विद्वज्जनम् जरावैक्लव्यप्रलपितमिति पश्यन्ति वृद्धजनोपदेशम्,

आत्मप्रज्ञापरिभव इत्यसूयन्ति सचिवोपदेशाय, कुप्यन्ति हितवादिने। सर्वथा तमभिनन्दन्ति, तमालपन्ति तं पार्श्वे कुर्वन्ति, तं संवर्द्धयन्ति, तेन सह सुखमवतिष्ठन्ते, तस्मै ददति, तं मित्रतामुपनयन्ति, तस्य वचनं शृण्वन्ति तत्र वर्षन्ति, तं बहु मन्यन्ते, तमाप्ततामापादयन्ति, योऽहर्निशमनवरतमुपरचिताञ्जलिरधिदैवतमिव विगतान्यकर्तव्यः स्तौति, यो वा माहात्म्यमुद्भावयति।

क्रमशः